UNIVERSITY NEWS 11 AUGUST 2026

AMAR UJALA

लविवि के प्रो. अरविंद एनएलयू की अकादमिक परिषद में मनोनीत

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के प्राध्यापक प्रो. अरविंद मोहन को नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी (एनएलयू) दिल्ली की अकादमिक परिषद का सदस्य मनोनीत किया गया है। यह मनोनयन दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश व एनएलयू दिल्ली के कुलाधिपति न्यायमूर्ति देवेंद्र कुमार उपाध्याय ने किया है। प्रो. मोहन का कार्यकाल 30 जून से प्रभावी माना जाएगा और वह अगले तीन वर्षों तक परिषद के सदस्य रहेंगे। एनएलयू के कुलपति प्रो. जीएस बाजपेयी ने पत्र भेजकर उन्हें इस उपलब्धि की जानकारी दी और परिषद में शामिल होने के लिए उनकी स्वीकृति मांगी है। विश्वविद्यालय अधिनियम के अनुसार अकादमिक परिषद में ख्यातिप्राप्त शिक्षाविदों, साहित्यकारों और कानूनी क्षेत्र की प्रमुख हस्तियों को स्थान दिया जाता है। (संवाद)

दीक्षारंभ में अनुशासन की महत्ता बताई

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय में बीएससी कृषि (ऑनर्स) के नवप्रवेशित छात्रों के लिए पांच दिवसीय दीक्षारंभ कार्यक्रम का आरंभ हुआ। डीन प्रो. गौरी सक्सेना ने नए छात्रों का स्वागत किया। उन्होंने संकाय की उपलब्धियों, शोध गतिविधियों और प्रयोगशालाओं के महत्व पर प्रकाश डाला। अनुशासन की महत्ता के बारे में भी बताया गया। उद्घाटन दिवस पर आईसीएआर की प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संगीता श्रीवास्तव ने 'कृषि के संवर्धन' पर व्याख्यान दिया। रसायन विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल मिश्रा ने 'तनाव प्रबंधन' पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम का समन्वय प्रो. रत्ना कटियार, डॉ. प्रवीण गुप्ता और डॉ. कविता अरोरा ने किया। (संवाद)

शोध में विपश्यना का दार्शनिक महत्व बताया

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के संस्कृत व प्राकृत भाषा विभाग की पोस्ट डॉक्टोरल फेलो डॉ. सीता देवी ने अपना शोध कार्य पूरा किया। उन्होंने विपश्यना का विसुद्धिमग्ग में दार्शनिक अध्ययन विषय पर शोध किया। इस शोध का निर्देशन डॉ. बृजेश कुमार सोनकर ने किया। विभाग में इस ग्रंथ का औपचारिक प्रस्तुतिकरण किया गया। प्रस्तुतिकरण के दौरान डॉ. सीता देवी ने विपश्यना के त्रिरत्न शील, समाधि और प्रज्ञा की उपादेयता बताई। उन्होंने इनकी सामाजिक, नैतिक एवं शैक्षिक महत्ता पर प्रकाश डाला। डॉ. सीता देवी ने बताया कि विपश्यना से चारित्रिक विकास और स्व-अनुशासन जैसी क्षमताएं सुदृढ़ होती हैं। ये आधुनिक समाज का आधारभूत आवश्यकता हैं। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. अभिमन्यु सिंह, विभाग के शिक्षक, शोधार्थी और छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। (संवाद)

SWATANTRA BHARAT

लखनऊ विश्वविद्यालय में नवप्रवेशी छात्रों के लिए पांच दिवसीय दीक्षारंभ कार्यक्रम शुरू

स्वतंत्र भारत लखनऊ। कुलपति प्रो. जय प्रकाश सैनी के संरक्षण और कृषि संकाय की डीन प्रो. गौरी सक्सेना के मार्गदर्शन में लखनऊ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय में बीएससी कृषि (ऑनर्स) के नवप्रवेशी छात्रों के लिए पांच दिवसीय दीक्षारंभ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। 10 से 14 अगस्त 2026 तक चलने वाले इस कार्यक्रम का उद्देश्य नए छात्रों को विश्वविद्यालय के शैक्षणिक वातावरण, कृषि संकाय की कार्यप्रणाली और उपलब्ध अवसरों से परिचित कराना है।कार्यक्रम के उद्घाटन दिवस की शुरुआत सरस्वती वंदना और विश्वविद्यालय के कुलगीत के गायन से हुई। इसके साथ ही नवप्रवेशी छात्रों की विश्वविद्यालय में ज्ञान एवं सीखने की नई यात्रा का औपचारिक शुभारंभ हुआ।इस अवसर पर कृषि संकाय की डीन प्रो. गौरी सक्सेना ने नवप्रवेशी छात्रों का स्वागत किया और उन्हें लखनऊ विश्वविद्यालय का हिस्सा बनने के साथ मिलने वाले अवसरों एवं जिम्मेदारियों से अवगत कराया। उन्होंने कृषि संकाय का परिचय देते हुए यहां संचालित शैक्षणिक कार्यक्रमों, विभिन्न विभागों, आधारभूत सुविधाओं, प्रयोगशालाओं और अनुसंधान गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने संकाय की विशेषज्ञता तथा छात्रों के लिए उपलब्ध शैक्षणिक एवं करियर संबंधी अवसरों पर भी प्रकाश डाला। डीन ने छात्रों को अनुशासन और अच्छे व्यवहार के महत्व के बारे में बताया तथा विश्वविद्यालय जीवन में जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।कार्यक्रम के पहले दिन दो ज्ञानवर्धक आमंत्रित व्याख्यान आयोजित किए गए। आईसीएआर-आईआईएसआर की प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संगीता श्रीवास्तव ने 'कृषि-ज्ञान का संवर्धन, जीवन का रूपांतरण और भविष्य का पोषण' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कृषि क्षेत्र में ज्ञान, नवाचार और अनुसंधान की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को कृषि शिक्षा के व्यापक महत्व से अवगत कराया।वहीं, लखनऊ विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग के पूर्व वरिष्ठ प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल मिश्रा ने 'जुड़ी हुई दुनिया में तनाव का प्रबंधन' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने छात्रों को बदलती जीवनशैली और शैक्षणिक दबाव के बीच तनाव को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के विभिन्न उपायों की जानकारी दी।व्याख्यान सत्रों के बाद संवादात्मक चर्चाओं का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों को विशेषज्ञों से सीधे संवाद करने और अपनी जिज्ञासाओं के समाधान प्राप्त करने का अवसर मिला। इन चर्चाओं के माध्यम से छात्रों को शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ करियर से जुड़ी संभावनाओं और भविष्य की दिशा को लेकर भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।पांच दिवसीय दीक्षारंभ कार्यक्रम में विशेषज्ञ व्याख्यान, परिसर भ्रमण, संवादात्मक गतिविधियां और प्रतिभा प्रदर्शन सहित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन गतिविधियों का उद्देश्य नवप्रवेशी छात्रों को विश्वविद्यालय के वातावरण से परिचित कराना तथा उनमें रचनात्मकता, टीम भावना, आत्मविश्वास और अपनत्व की भावना को बढ़ावा देना है।कार्यक्रम के सफल समन्वय में प्रो. रत्ना कटियार, डॉ. प्रवीण गुप्ता, डॉ. कविता अरोड़ा, डॉ. अवंतिका पांडे, डॉ. एकता सिंह और डॉ. प्रिया सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

लखनऊ विश्वविद्यालय में विपश्यना के दार्शनिक अध्ययन पर शोध कार्य पूर्ण

स्वतंत्र भारत लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग में पोस्ट डॉक्टोरल फेलो डॉ. सीता देवी ने 'विपश्यना का विसुद्धिमग्ग में दार्शनिक अध्ययन' विषय पर अपना शोध कार्य पूर्ण किया। यह शोध कार्य शोध निर्देशक डॉ. बृजेश कुमार सोनकर के निर्देशन में संपन्न हुआ।शोध कार्य के अंतर्गत डॉ. सीता देवी ने विसुद्धिमग्ग में वर्णित विपश्यना के विभिन्न दार्शनिक एवं व्यावहारिक पक्षों का अध्ययन किया। शोध के प्रस्तुतीकरण के दौरान उन्होंने विशेष रूप से शील, समाधि और प्रज्ञा जैसे त्रिरत्नों की सामाजिक, नैतिक एवं शैक्षिक उपयोगिता पर प्रकाश डाला।शोध प्रस्तुतीकरण में बताया गया कि विपश्यना केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से व्यक्ति में चारित्रिक विकास, आत्मानुशासन, मानसिक एकाग्रता और सकारात्मक जीवन-दृष्टि जैसी क्षमताओं का विकास किया जा सकता है। आधुनिक सामाजिक परिवेश में इन गुणों को व्यक्ति और समाज दोनों के लिए महत्वपूर्ण आवश्यकता बताते हुए शोध में विपश्यना की प्रासंगिकता को रेखांकित किया गया।डॉ. सीता देवी ने शोध प्रस्तुतीकरण के दौरान विपश्यना की दार्शनिक अवधारणाओं और वर्तमान समय में उनकी उपयोगिता पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि प्राचीन भारतीय चिंतन परंपरा में वर्णित साधना पद्धतियां आज भी व्यक्ति के नैतिक एवं मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।शोध ग्रंथ के प्रस्तुतीकरण के अवसर पर संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अभिमन्यु सिंह सहित विभाग के सभी शिक्षक उपस्थित रहे।

AAJ

एलयू के प्रो. अरविंद मोहन एनएलयू दिल्ली की अकादमिक परिषद में मनोनीत

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के प्रतिष्ठित प्राध्यापक प्रो. अरविंद मोहन को नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी एनएलयू दिल्ली की अकादमिक परिषद का सदस्य मनोनीत किया गया है। यह प्रतिष्ठित मनोनयन दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एवं एनएलयू दिल्ली के कुलाधिपति न्यायमूर्ति देवेंद्र कुमार उपाध्याय द्वारा एनएलयू दिल्ली अधिनियम 2007 की धारा 15-1 बी के तहत किया गया है। प्रो अरविंद मोहन का यह कार्यकाल 30 जून 2026 से प्रभावी होकर आगामी तीन वर्षों की अवधि के लिए होगा।

VOICE OF LUCKNOW

प्रो. अरविंद मोहन एनएलयू दिल्ली की अकादमिक परिषद में मनोनीत

विशेष संवाददाता (vol)

लखनऊ। लविवि के अर्थशास्त्र विभाग के प्रतिष्ठित प्राध्यापक प्रो. अरविंद मोहन को नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी (एनएलयू) दिल्ली की अकादमिक परिषद का सदस्य मनोनीत किया गया है। यह मनोनयन दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एवं एनएलयू दिल्ली के कुलाधिपति न्यायमूर्ति देवेंद्र कुमार उपाध्याय द्वारा एनएलयू दिल्ली अधिनियम 2007 की धारा15(1)(बी) के तहत किया गया है। प्रो. अरविंद मोहन का यह कार्यकाल 30 जून 2026 से प्रभावी होकर आगामी तीन वर्षों की अवधि के लिए होगा। एनएलयू दिल्ली के कुलपति प्रो. जीएस बाजपेयी द्वारा पत्र भेजकर प्रो. मोहन को इस उपलब्धि की जानकारी दी गई और अकादमिक परिषद के इस महत्वपूर्ण दायित्व के लिए उनकी स्वीकृति मांगी गई है। विश्वविद्यालय अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार, यह मनोनयन ख्यातिप्राप्त शिक्षाविदों, साहित्यकारों या कानूनी क्षेत्र की प्रमुख हस्तियों की श्रेणी के अंतर्गत किया जाता है। शिक्षा एवं अर्थशास्त्र के क्षेत्र में प्रो. अरविंद मोहन के लंबे अनुभव और अकादमिक योगदान को देखते हुए उन्हें इस प्रतिष्ठित संस्था की नीति-निर्धारक संस्था में स्थान दिया गया है।

TOI

LU prof nominated to NLU council

Professor Arvind Mohan from the department of economics at Lucknow University has been nominated as a member of the academic council of National Law University (NLU), Delhi.

The nomination was made by Justice Devendra Kumar Upadhyaya, chief justice of the Delhi high court and chancellor of NLU Delhi, in recognition of Prof Mohan's academic contribution.

DAINIK JAGRAN

पूर्व आइएएस अनूप चंद पांडेय लेंगे छात्र-छात्राओं की कक्षाएं

जासं • लखनऊ: पूर्व आइएएस अनूप चंद पांडेय लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं को लोक प्रशासन का पाठ पढ़ाएंगे। साथ ही अपने करियर के अनुभव भी साझा करेंगे। विश्वविद्यालय प्रशासन ने प्रोफेसर आफ प्रैक्टिस के रूप में उनका चयन किया है। 15 अगस्त के बाद वे कक्षाएं लेंगे। सोमवार को उन्होंने विभाग में पहुंच कर शिक्षकों के साथ बातचीत भी की।

अनूप चंद पांडेय • सौ इंटरनेट मीडिया

दरअसल, लवि ने हाल ही में प्रोफेसर आफ प्रैक्टिस के तहत प्रशासनिक, इंडस्ट्री से लेकर विभिन्न क्षेत्रों से विशेषज्ञों ने आवेदन लिए थे। इसका उद्देश्य ऐसे अनुभवी पेशेवरों, प्रशासनिक सेवाओं और इंडस्ट्री से जुड़े विशेषज्ञों को छात्र-छात्राओं से रूबरू कराना है जिनका उल्लेखनीय कार्य हो, ताकि उनके अनुभवों का लाभ मिल सके। इसमें उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव अनूप चंद पांडेय का चयन किया गया है। अब यहां लोक प्रशासन विभाग में परास्नातक पहले व तीसरे सेमेस्टर की कक्षाएं लेंगे। लेक्चर के माध्यम से व्यावहारिक ज्ञान के साथ प्रशासनिक अनुभवों को केस स्टडी के रूप में साझा करेंगे, ताकि छात्र-छात्राएं थ्योरी के अलावा उनके विभिन्न क्षेत्रों के फील्ड अनुभव को भी जान सकें। सिविल सेवा परीक्षा के साक्षात्कार आदि की तैयारी में भी लाभ मिलेगा। प्रवक्ता प्रोफेसर मुकुल श्रीवास्तव ने बताया कि 15 अगस्त के बाद पूर्व आइएएस अनूप चंद पांडेय कक्षाएं लेंगे।

एक नजर में

एनएलयू अकादमिक परिषद के सदस्य बने प्रो. अरविंद

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के प्राध्यापक प्रो. अरविंद मोहन को नेशनल ला यूनिवर्सिटी (एनएलयू) दिल्ली की अकादमिक परिषद का सदस्य मनोनीत किया गया है। यह मनोनयन दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश व एनएलयू के कुलाधिपति न्यायमूर्ति देवेंद्र कुमार उपाध्याय ने किया है। प्रो. अरविंद का कार्यकाल 30 जून 2026 से प्रभावी होकर तीन वर्षों के लिए होगा। एनएलयू के कुलपति प्रो. जी.एस. बाजपेयी ने प्रो. मोहन को पत्र भेज कर उनकी स्वीकृति मांगी है। (जासं)

HINDUSTAN

प्रो. अरविंद एनएलयू की अकादमिक परिषद में

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के शिक्षक प्रो. अरविंद मोहन को नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी दिल्ली की अकादमिक परिषद का सदस्य मनोनीत किया गया है। यह मनोनयन दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश व एनएलयू दिल्ली के कुलाधिपति न्यायमूर्ति देवेंद्र कुमार उपाध्याय द्वारा एनएलयू दिल्ली अधिनियम 2007 की धारा 15(1)(b) के तहत किया गया है। प्रो. अरविंद मोहन का कार्यकाल 30 जून से प्रभावी होकर आगामी तीन वर्षों के लिए होगा।

AMRIT VICHAR

डॉ. सीता देवी ने पूरा किया दार्शनिक शोध

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के संस्कृत व प्राकृत भाषा विभाग में पोस्ट डॉक्टोरल फेलो डॉ. सीता देवी द्वारा "विपश्यना का विसुद्धिमग्ग में दार्शनिक अध्ययन" पर शोध कार्य पूर्ण किया। शोध निर्देशक डॉ. बृजेश कुमार सोनकर के निर्देशन में यह शोध कार्य हुआ है। डॉ. सीता देवी ने शोध कार्य का प्रस्तुतीकरण किया जिसमे विसुद्धिमग्ग मे विपश्यना पर आधारित शील, समाधि तथा प्रज्ञा जैसे त्रिरत्न की सामाजिक, नैतिक एवं शैक्षिक उपादेयता पर प्रकाश डाला गया। विभागाध्यक्ष प्रो. अभिमन्यु सिंह के अतिरिक्त सभी शिक्षक गण उपस्थित रहे।

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून

अमृत विचार, लखनऊ : मूल्यपरक शिक्षा की व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत लखनऊ विश्वविद्यालय मे व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता ज्ञान पांडेय ने मानव मूल्यों एवं नैतिकता के क्षेत्र में लगभग 20 वर्षों के अध्ययन व अनुभव का उल्लेख करते हुए कहा कि जीवन को जोड़ने वाला सूत्र बताते हुए कहा कि रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून का अर्थ पानी से मतलब सदाचार, नैतिकता और सम्मान से भी है। कार्यक्रम का समन्वय प्रो. अमृतेश चंद्र शुक्ल एवं डॉ. सुषमा मिश्रा द्वारा विभागाध्यक्ष प्रो. गौरी सक्सेना के नेतृत्व मे किया गया। इस अवसर पर विज्ञान संकाय की डीन प्रो. शीला मिश्रा की उपस्थिति रही। कार्यक्रम मे वनस्पति विज्ञान विभाग के बड़ी संख्या मे पीएच.डी. शोधार्थियों एवं शिक्षकों ने सहभागिता की।

प्रो. अरविंद मोहन अकादमिक परिषद में हुए मनोनीत

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के प्राध्यापक प्रो. अरविंद मोहन को नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी (एनएलयू) दिल्ली की अकादमिक परिषद (अकादमिक काउंसिल) का सदस्य मनोनीत किया गया है। यह मनोनयन दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश व एनएलयू दिल्ली के कुलाधिपति न्यायमूर्ति देवेंद्र कुमार उपाध्याय द्वारा एनएलयू दिल्ली अधिनियम 2007 की धारा 15(1)(b) के तहत किया गया है। प्रो. अरविंद मोहन का कार्यकाल 30 जून से प्रभावी होकर आगामी तीन वर्षों की अवधि के लिए होगा।

सरस्वती वंदना से शुरू हुई कृषि छात्रों की दीक्षा

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय में कृषि संकाय में बीएससी कृषि (ऑनर्स) के नवप्रवेशित छात्रों के लिए पांच दिवसीय दीक्षारम्भ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। उद्घाटन दिवस का प्रारंभ सरस्वती वंदना और विश्वविद्यालय के कुलगीत के गायन के साथ हुआ, जो ज्ञान और अधिगम की एक नई यात्रा की शुरुआत का प्रतीक है। इस अवसर पर कृषि संकाय की डीन प्रो. गौरी सक्सेना ने नए छात्रों का हार्दिक स्वागत किया और उन्हें लखनऊ विश्वविद्यालय का हिस्सा बनने से जुड़े अवसरों और जिम्मेदारियों के बारे में बताया। डीन ने कृषि संकाय का संक्षिप्त परिचय देते हुए इसके शैक्षणिक कार्यक्रमो, विभागों, बुनियादी ढांचे, प्रयोगशालाओं, अनुसंधान गतिविधियों, संकाय की विशेषज्ञता और छात्रों के लिए अवसरों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का समन्वय प्रो. रत्ना कटियार, डॉ. प्रवीण गुप्ता, डॉ. कविता अरोरा, डॉ. अवंतिका पांडे, डॉ. एकता सिंह और डॉ. प्रिया सिंह ने किया।